ओम शान्ति

एक दिव्य पुरूष प्रजापिता ब्रह्मा

इस निर्दयी दुनियां में एक असाधारण आत्मा ने मानव शरीर में जन्म लिया। धीरे-धरीरे उनका उज्जवल व्यक्तित्व निखरने लगा, उनकी गहरी सूक्ष्म दृष्टि एवं शान्त आकृति सभी को आकर्षित करने लगी। हीरों के व्यापार से सम्पत्ति की दुनियां में उन्होंने अपने कदम आगे बढ़ाये। सन् 1876 में सिन्ध में, लेखराज के नाम से इस कुलीन व्यक्ति ने जन्म लिया। व्यापार में अपनी कार्यकुशलता से वे लखपति बन गये। अचानक ही उनमें एक दिव्य परिवर्तन आया और उन्होंने सभी ऐश्वर्यो को त्याग कर दिया। उनके व्यक्तित्व में स्वप्न, ट्रांस व साक्षात्कार की दिव्य विधियों द्वारा साधारणता से ऊंचा उठने का एवं दिव्य अवतरण का एक अनोखा संगम हआ जिसने आंतरिक अंधकार को दूर कर आत्म जागृति की ज्योति जगाई तथा स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन की श्रेष्ठ विधि अपनाकर मनुष्यों को इस दुनियां के दु:ख-दर्द से मुक्ति दिलाकर कुलीनता, प्रतिष्ठा एवं पवित्रता का जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कराया और माताओं-बहनों के मधुर, कोमल स्वभाव एवं आन्तरकि शक्ति को पवित्र बनाकर उन्हें ईश्वरीय कार्य के लिए निमित्त बनाया। हंस समान मीठी और श्वेत वस्त्रधारिणी इन बहनों ने सादे जीवन का मिसाल सभी के सामने रखा तथा योग और तपस्या के सत्य सिद्धान्त सभी को सिखाए। उनका क्रांतिकारी लक्ष्य था दुनिया को नया बनाने का, जिसके लिए परमात्म-शक्ति ने दादा लेखराज को 'प्रजापिता ब्रह्मा' से नामकरण किया। उन्होंने इस ऊँच सेवा के लिए हीरों के धन्धे को छोड़कर सभी में छिपे हुए सच्चे हीरों की खोज में अपना जीवन लगा दिया । जिस प्रकार एक साधारण मक्खी के पंख मधु में फंस जाने से बाहर नहीं निकाल सकते हैं, उसकी भेंट में मधु-मक्खी, मधु को इकट्ठा करके वापस अपने घर की ओर उड़ती है, जहाँ पर शान्ति एवं खुशी है। इसी प्रकार बाबा ने शिक्षा दी कि अपने आपको जानो, अपनी दिव्यता को पहचानों और अपनी आन्तरिक यात्रा को फलीभूत करने के लिए इस बाह्य दुनिया के फुसलाने वाले वैभवों एवं पदर्थों का त्याग करो। जिससे सुख-शान्ति प्राप्त होगी।

प्रजापिता ब्रह्मा में दिव्य अवतरण की उपस्थिति थी। उन्होंने सर्व धर्म एवं आध्यात्मिक विद्याओं से परे राजयोग की श्रेष्ठ विधि द्वारा बुरे व्यक्तियों को अच्छे में परिवर्तन किया ।भक्तों की श्रद्धा को ठेस नहीं पहुंचायी, लेकिन उन्होंने सर्व धर्म पिताओं के महान शिक्षाओं के सार को अपनते हुए आत्माओं में नयी जागृति लाई। जबकि फैशन से भरपूर जीवन एवं भोग के वश असभ्य अनात्मवाद के उपयोग रूपी देह अभिमान और तामसिक आदतों से छुड़ाना तथा मांसाहार वा नशीले पदार्थो से बचाना। मनुष्य की स्मृति के दिव्य जीवन के प्रभावशाली स्तर तक उठाना, देह अभिमान से परिवर्तन कर आत्म जागृति लाना जो कि पापों से मुक्त होने का मार्ग है। जिसके द्वारा ही मानव-मात्र आन्तरिक आत्मा के सत्य स्वरूप को प्राप्त कर सकते

है। दादा लेखराज स्वंय सारी मानवता के दिलों का सर्जन बन गये और चाकू के वजाए ज्ञान से कब्रदाखिल दिव्यता को फिर से जागृत कर दिया । ऐसे महापुरूष, जिन्होंने आध्यात्मिक नीति एंव वैज्ञानिक विधि को आपनाया, को महान क्रान्तिकारी भी कह सकते हैं। वे लम्बी आयु वाले थे, सारे वैभवों का त्याग कर छोटी सी शुरूआत से विश्व भर में उन्होंने अपना प्रभुत्व स्थापन किया। अपने उन्नत विश्वास से, शान्ति की शक्ति से एवं अपनी साकार उपस्थिति से सभी की पालना की तथा घृणा को, विपत्तियों को एवं हिंसक लहरों को पराजित किया।

आज वह साकार में नहीं है। 18 जनवरी 1969 को उन्होंने इस पांच तत्वों के शरीर को त्यागा परन्तु आज भी उनका प्रभाव आध्यात्मिक रीति से 5 महाद्वीपों के सर्व नागरिकों पर फैलता जा रहा है। यह कहना कि वे अभी नहीं हैं-ईश्वरीय निंदा है। वे अभी भी लाखों के दिलों में योग की विधि द्वारा विराजमान है। मानवता में आशाहीनता, दरिद्रता एवं असभ्यता को परिवर्तन करने वाली यह एक विश्व न्याय प्रभुत्व की दिव्य मिशनरी है।

अभी बाबा साकार में नहीं है। परन्तु उनकी जीवन कहानी प्रेरणादायक है। कारलिल के शब्दों में - ''कोई भी महान व्यक्ति विना मतलब के नहीं जीता। दुनिया का इतिहास महान व्यक्तियों की जीवन कहानी ही तो है।'' प्रजापिता ब्रह्मा, जिन्होंने अपना साकार शरीर 18 जनवरी 1969 को छोड़ा, ने काफी कठिनाईयों का सामना किया तथा तामसिक शक्तियों के साथ युद्ध भी की। परन्तु आखरीन विजय शिवबाबा की हुई जिन्होंने, इन्हें इस कार्य के लिए इंजीनियर बनाया। सामाजिक प्रतिकार करने वालों ने ओम मण्डली पर हमला किया, जिसके प्रत्यक्ष स्थापक ब्रह्मा बाबा थे और अदृश्य रूप से शिवबाबा सुप्रीम नायक थे। जनता की आरे से संगठित रूप में अवरोध हुए, कलंक लगाये गये, गलत सूचनाओं एवं राजनैतिक धमकियों का उायोग किया गया, श्रद्धालु माताओं पर बंधन डाले गये तथा अन्य कई अशुद्ध प्रचार किए परन्तु सभी कुछ निष्फल रहा। ये सभी नि:सार युक्तियां विरोधियों द्वारा अपनायी गयी थीं। प्राचीन काल से विश्व के इतिहास में यह दर्शाया गया है कि आसुरी शक्ति पर हमेशा दिव्य शक्ति की ही विजय हुई है। यहाँ भी पिताश्री जी अपनी अचल अवस्था से विश्व के नव -निर्माण के कार्य में मानवता, दया एवं विश्व-बन्धुत्व की भावना से आगे बढ़ते रहे। आन्तरिक ज्योति, परम ज्योति की ओर तीव्रगति से बढ़ती ही गयी और सारे विश्व को प्रकाशयुक्त करते हुए नयी दुनिया की व्यवस्था के लिए अग्रदूत हुई। वर्तमान भौतिक शिष्टता के नष्टधर्मियों ने सामाजिक रस्मों को इतना असभ्य बना दिया है कि उनकी शक्ति ह्रांस अनिवार्य है। उनके भस्मावशेष से फिर से एक बार सद्भावनाओं एवं शान्ति की वसंत बहार विकसित होगी। ओम मण्डली ने अनेक संकटों के समय का समाना किया कुछ सामाजिक तत्वों ने विरोध भी किया, हिन्दु धर्म परायणता वालों ने किया। उसी

बीच भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ। ओम मण्डली पाकिस्तान में ही थी। लोक विरूद्धता होने पर भी पाकिस्तान की जनता ने पिताश्री जी एवं सफेद वस्त्रधारिणी बहनों की पवित्रता, निर्दोषता एवं ऊंचे स्तर की दिव्यता से प्रभावित होकर दादा को पाकिस्तान (कराची) में ही रहने के लिए विनयपूर्वक प्रार्थना की परन्तु परम शक्ति का आदेश भारत की ओर करने का अटल था। माऊण्ट आबू की भूमि में दिलवाड़ा के संगमरमर की अद्भुत कला के पास ही बाबा ने वह पवित्र जगह चुनी, जहाँ पर ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। पर्वत के शिखर, झील, मन्दिर एवं शान्ति के बीच प्रजापिता ब्रह्मा के प्रधान नेतृत्व में यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का आध्यात्मिक अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय बन गया। पिताश्री जी साकार रूप में नहीं है लेकिन फरिश्ते रूप में अपनी गहरी सूक्ष्म दृष्टि से लाखों को चाहे दूर हों या पूर्व के हों या पश्चिम के हों, ऊँच दर्जे के हो या नीचे दर्जें के हों सभी को प्रेरणा से चुम्बक की तरह अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। जो लोग आध्यात्मिक उन्नति के यात्री हैं वे माउण्ट आबू के शिखर पर दुनियां के विकारी बन्धनों को तोड़ने तथा विजयी आत्मा बनने की नई विधि सीखने आते हैं। मैं भी माऊण्ट आबू अनेक बार इसी आशा के साथ गया हूँ कि वहाँ जाकर दुनियां के विषयों से दूर हटकर अपने आपको दिव्य स्मृति के आक्सीजन से शक्तिशाली बना सकूँ।

मैं कई बार अपने आपसे पूछता हूँ क्यों? क्यों इन सभी आधुनिक तकनीकों के साधन होते हुए भी हम एक छोटा-सा स्वस्थ एवं शान्तिमय संसार स्थापना नहीं कर पा रहें हैं? क्यों सुख एवं समृद्धि हमसे दूर चली गई है ? क्यों हमारी पृथ्वी एक सुंदर बगीचे से कांटों का जंगल बन गई है। जहाँ हर क्षण मौजों से बिताने के बजाए उसे हमारे जीवन से निचोड़ा गया है?

हम परमात्मा एवं प्रकृति के साथ उपने अनादि सम्बन्ध को भूल गये हैं। वैज्ञानिक प्राप्तियों के अभिमान में हम यह भूल बैठे हैं कि यह संसार कुछ नियमों में बंधा हुआ है जिन नियमों का हम संदेह-वंश उल्लंघन कर देते हैं। उन नियमों को तोड़ने से आज भयानक स्थिति आ पहुंची है। अपनी शक्ति को प्राकृतिक वायुण्डल के अनुसंधान एवं उसे व्यवहार में लाने और लगाने से हम इस ज्ञान को भूल गये हैं कि वास्तव में हम कौन हैं और क्या हैं। इन भौतिक प्राप्तियों के पीछे बिना सोचे समझे दौड़ने से हम अपने स्वराज्य को खो चुके हैं। समस्याएं निष्ठुरता से बढ़ती हुई हमें अपने पांवों तले कुचल रही हैं।

आन्तरिक गहराई में उतरकर अपने आपको खोजो। मैं कौन हूँ? –इस पहेली के अन्त तक सत्य योग की विधि द्वारा पहुँच सकते हैं। इसके लिए निरन्तर स्मृति रहे कि परमात्मा हमारे साथ है और उन्होंने हमें निमित्त बनाया है।

विश्व विद्यालय की एक पुस्तक 'आदि देव" में एक सत्य अनुभव लिखा है:

जब हम अपने बहुत काल की गुप्त शक्तियों के शिखर तक पहुँचेगे और जब अच्छी और बुरी शक्तियों का संघर्ष खत्म हो जायेगा तब बहुत काल का रूका हुआ परिवर्तन तुरंत ही शुरू हो जाएगा। अपने मानसिक प्रकृति को बदलने रेखा 23 डिग्री से हटकर सीधी हो

जायेगी और सभी खण्ड फिर से आपस में मिल जायेंगे, भिन्न-भिन्न ऋतुओं के बजाए पूरे साल में केवल एक बहारी ऋतु ही होगी। फिर से एक बार संपन्नता-युक्त पृथ्वी संपूर्ण आधुनिक तकनीकी से युक्त, दिव्य गुण युक्त नये समाज को जन्म देगी।

आश्चर्यजनक बात तो यह है कि बाबा अति उत्तम व्यवस्था से, चित्त को आकर्षित करने वाली शिक्षाओं से तथा सभी में संतुष्टता को बढ़ाते हुए इन सफेद वस्त्रधारिणी बहनों के द्वारा विश्व भर मं स्थापित इस संस्था का संचालन करा रहे हैं।

अंतिम संकल्प: एक समय था जबकि इस छोटी-सी ओम-मण्डली ने हैदराबाद में रहने के लिए बहुत संघर्ष किए थे ओर आज उसने सारे विश्व में अपने पंख फैलाये हैं। स्थायी शिक्षा एवं उपदेशों के द्वारा, नियम एवं मार्यादाओं का पालन कराते, दिव्य साक्षात्कार की आध्यात्मिक विधि अपनाते हुए बाबा ने अपने-अपने अनुयायियों की शिक्षित किया एवं उन्हें ऊंचा उठाया। 'शिक्षा ही मानव में समायी हुई संपूर्णता का स्पष्टीकरण है।" धर्म (अपने श्रेष्ठ अर्थ में) मानव में समायी हुई दिव्यता का स्पष्टीकरण है। मैंने कइयों के अनुभव सुने हैं, जिन्होंने बाबा के शब्दों के द्वारा अपने में सम्पूर्ण परिवर्तन किया है। उनके लिए बाबा के शब्द जैसे मोती समान हैं। मानव जाति अपने असली स्वरूप (आत्मा) को पहचाने और भौतिक शारीरिक इच्छाओं के आशाहीन संकल्पों को छोड़ दे। नये विश्व का भविष्य कुछ भी नहीं है और ऐसी आध्यात्मिक व्यवस्था का अवतरण अवश्य होगा। केवल जप या गुप्त शान्ति से नहीं परन्तु इस अभ्यास से कि हम आत्मा है और यही सच्चाई है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com